REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2023

ग्रामीण विकास में जनसंचार का प्रभाव

रामनिवास गुप्ता
शोधार्थी
प्रो. (श्रीमती) तारामणि श्रीवास्तव
शोध निर्देशक, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग
एवं
संकायाध्यक्ष समाज विज्ञान संकाय , पंडित एस. एन. शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल (म.प्र.)

जनसंचार वर्तमान में सबसे शक्तिशाली हम समसामयिक संसाधन है तथा इसमें संचार प्रक्रिया के उपयुक्त सभी तत्व शामिल होते हैं। जनसंचार संसाधन अकेले नहीं अभी तो कई व्यक्तियों के योगदान से ही संभव होता है। यह संसाधन में सूचनाएं एक विशाल जनसमूह के लिए प्रेरित की जाती है। धूम मंडलीकरण एवं नव उदारवाद में संचार संसाधन अथवा मीडिया ने एक विशाल उद्योग का रूप धारण कर लिया है। रेडियो, टीवी, निमंत्रित मीडिया ने बाजार में वर्चस्व स्थापित कर लिया है। समाचार पत्र अब समाचार पत्र बन गए हैं।

नए दौर में जनसंचार के समस्त संसाधन उच्च मूल्य आदर्शों को समाज में प्रचारित प्रसारित करने में सहायक होते हैं, लेकिन जनसंचार के कई सकारात्मक गुण भी हैं। इन साधनों ने जिस तरह व्यक्ति समाज को प्रभावित किया है, वे अद्‌भूत हैं। नई संचार तकनीक के अंतर्गत अंतरिक्ष, संचार, दूरसंचार, टेलीकॉम टेलीप्रिंटर, ऍम. कॉलिंग, वॉकी टॉकी, टेलीफोन, मोबाईल फोन आदि संवाद संप्रेषण के नए संसाधनों से दुनिया सिकुड़ गई है। विश्व का कोई ऐसा देश नहीं जिसके बारे में हम नहीं जानते हैं या न जान सके ऍम टूट चुकी है। अब ज्ञान का स्त्रोत केवल शास्त्र या पुस्तकें ना रहकर इंटरनेट हो गया है। साहित्य, संस्कृति एवं मानविकी के क्षेत्र में नई परिभाषाएं गढ़ी जाने लगी हैं। धरती और आकाश का भेद मिट गया है। प्रकृति और पर्यावरण के क्षेत्र में संचार संसाधनों ने काफी उन्नति की है। कृषि क्षेत्र की उन्नति नवीन तकनीकी का परिणाम है। मीडिया अथवा संचार के कारण सामाजिक आचार व्यवहार में बड़े परिवर्तन आए हैं। समाज का परंपरागत स्वरूप बदल गया है। परिवार वहां यहां तक कि धर्म ने भी नवीन रूप धारण कर लिया है। विचारधाराओं, सिद्धांतों का समय

सामाजिक पक्ष

आधुनिक संचार माध्यम ग्रामीण जीवन शैली को बहुत प्रभावित किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में परंपरागत रहन–सहन एवं आचार–विचार में क्रांतिकारी परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। इस प्रकार संचार माध्यमों की भूमिका व्यक्ति के विकास एवं सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि ''विकास के लिए संचार एक निवेश है।'' लेकिन वहीं पर टेलीविजन और मोबाईल, इंटरनेट का प्रसार निरंतर दिनों–दिन बढ़ रहा है परंतु उसका स्तर दिन–ब–दिन गिर रहा है। ज्यादातर व्यक्ति टेलीविजन और

मोबाइल इंटरनेट की चपेट में हैं वो घरों में कैद होकर रह गए हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि व्यक्तिगत रूप से अंतःक्रिया कम हुई है जिससे हम की भावना में कमी आ रही है।

राजनैतिक पक्ष

संचार माध्यमों ने अपनी उपयोगिता के रूप में राजनीतिक गतिविधियों के संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इससे राजनीतिक जागरूकता को बढ़ावा मिलता है और लोगों में राजनीतिक गतिविधियों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि होती है। चुनाव के पूर्व होने वाले जनमत संग्रह राजनैतिक संचार के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है। संचार माध्यमों से आम जनता की आवश्यकताओं उनकी इच्छाओं एवं उनकी सोच प्रकट होती है। इन सबसे राजनीतिज्ञों को अपने कार्यकलापो के बारे में फीडबैक मिलता है। संचार माध्यमों के प्रसार से अध्ययन क्षेत्र में राजनीतिक शिक्षा का प्रसार हुआ है।

आर्थिक पक्ष

भारत में राष्ट्रीय विकास की अवधारणा वस्तुतः भारत के ग्रामीण विकास में सन्निहित है। यदि कहा जाए कि आर्थिक विकास की धुरी, कृषि का विकास है और कृषि के विकास में ही आर्थिक विकास छिपा हुआ है तो अतिशयोक्ति न होगी। कृषि की दशा के सुधार हेतु संचार–साधनों का सम्यक् प्रयोग करके तकनीकी व प्रौद्योगिकी ज्ञान एवं सूचनाओं से ग्रामीण/कृषकों को अवगत कराया जा सकता है तथा शासकीय व अशासकीय सहायता से भी लाभान्वित किया जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र अम्बेडकर नगर में सहज जन सेवा केन्द्र, इंटरनेट मोबाईल आदि से कृषकों की दशा में सुधार आ रहा है।

शैक्षिक पक्ष

जब रेडियो, टेलीविजन का आविष्कार हुआ तो संचार माध्यमों में नई क्रांति आयी। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन ने शहरी क्षेत्रों के अतिरिक्त सुदूर बीहड़ और ग्रामीण क्षेत्रों में भी अपनी लोकप्रियता कायम की। आम आदमी की मानसिकता बदलने में वह काफी हद तक सफल रहा। पढ़ने–लिखने और सिखने के अतिरिक्त व्यक्ति के दैनिक जीवन को प्रभावित करने वाले आयामों में भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने प्रभावित किया। कोरोना काल में इंटरनेट और संचार के साधनों का विकास ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है। विकासखण्ड जहांगीरगंज, रामनगर, बसखारी में सर्वेक्षण और साक्षात्कार से ज्ञात हुआ है कि क्षेत्र में छात्र–छात्राओं में शैक्षिक अभिरूचि में अभिवृद्धि हुई है।

धार्मिक पक्ष

जनसंचार के विविध साधन आज के युग में राष्ट्र धर्म के विकास के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना के आदर्श को प्रस्तुत कर रहे हैं। विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा शांति और सद्भावना, भाई–चारे का संदेश प्रेषित करने में सहायक होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में रूढ़िवादिता और अंधविश्वास में तेजी से कमी आ रही है। संचार माध्यमों के कारण अध्ययन क्षेत्र में रूढ़िवादी एवं अप्रासंगिक तथ्यों से निजात पाने की प्रवृत्ति का संचार हो रहा है। क्षेत्र में वैज्ञानिक सोच और तर्क–वितर्क करने की प्रक्रिया का विकास हुआ है।

खान–पान में जागरूकता एवं जनसंचार

संचार माध्यमों के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से और खान–पान के संबंध में विभिन्न विज्ञापन और जागरूकता कार्यक्रमों के कारण अध्ययन क्षेत्र में पोषण के संबंध में सजगता का संचार हुआ है जिसका प्रभाव ग्रामीणों के खान–पान की दिनचर्या पर पड़ रहा है। स्वच्छता संबंधी संदेश लोगों तक आसानी से पहुंच रहा है जिससे क्षेत्र में बीमारियों में कमी आई है और लोगों की जीवन प्रत्याशा बढ़ी है।

ग्रामीणों का शहरों की तरफ पलायन एवं जनसंचार

जनसंचार माध्यमों द्वारा ग्रामीणों की विभिन्न शासकीय योजनाओं जैसे–मनरेगा, एसजीएसवाई आदि के प्रति जागरूक होने पर इन कार्यक्रमों की भागीदारी बढ़ी है जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीणों का शहरों की तरफ

पलायन में कमी आई है। सहज जन सेवा केन्द्र, ऑनलाईन शिक्षा के प्लेटफार्मों ने क्षेत्र की युवा पीढ़ी को गांव में ही रोजगार का सृजन किया है।

अपराध एवं जनसंचार

संचार माध्यम समाज का दर्पण हैं। समाज में पल–पल घट रही घटनाओं का विश्लेषण आम लोगों तक पहुंचाने का कार्य करता है। ये समाज में जहां अनेक प्रकार की गतिविधियों का निवारण तथा ज्ञानपरक तथ्य प्रस्तुत करते हैं वहीं इससे सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि होती है। वहीं दूसरी ओर समाज में घट रही विसंगतियों एवं आपराधिक घटनाओं का प्रस्तुतीकरण भी इसी गति से हो रहा है। इन्हीं के फलस्वरूप जहां समाज में अनेकानेक सकारात्मक पहलुओं का प्रभाव रहता है वहीं नकारात्मक रूप से भी संचार माध्यम समाज पर प्रभाव डालते हैं। जैसे–जैसे इंटरनेट पर निर्भरता बढ़ रही है, नए तरह के अपराधों को अंजाम देने का रास्ता खुल गया है। संचार माध्यमों से लोक संस्कृति और परंपराओं पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि इनकी अभिरूचि में वृद्धि हुई है। संचार माध्यम क्षेत्र के लिए अभिशाप न होकर वरदान सिद्ध हो रहा है। जो ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन का मुख्य कारण बन रहा है। इस तरह यह परिवर्तन बहुत सारे पुराने स्वभाव, विश्वास, विचारधारा एवं मूल्यों के रूपांतरण से जुड़ा हुआ है साथ ही कुछ नए विचारधाराओं एवं मूल्यों को विकसित करता है जो आधुनिक समय में जीने के लिए आवश्यक है।

टीवी में न केवल नई नई राष्ट्रीय चैनल अभी तो अंतर्राष्ट्रीय चैनलों की भरमार है। रेडियो प्राइवेट एफएम चैनलों के माध्यम से अपनी एक अलग पहचान बनाई है। इन सभी संचार संसाधनों को पछाड़ते हुए इंटरनेट ने खुद को शक्तिशाली सिद्ध किया है। संचार का प्रभाव संचार के भाषिक स्वरूप के फलस्वरूप ही विश्व में विभिन्न संस्कृतियों तथा सफलताओं का जन्म हुआ। संचार ने मुख्य रूप से सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक विकास पर प्रभाव डाला। जनसंचार संसाधन के संप्रेषित समूह की रूचियों मान्यताओं को बदलने बढ़ाने अथवा घटाने में अग्रणी भूमिका होती है। भूमंडलीकरण के फलस्वरूप वर्तमान संचार प्रणाली ने बाजारवाद अथवा उपभोक्तावाद को संरक्षण दिया है। इसके फलस्वरूप मानवीय सामाजिक मूल्य संकट में है। मानव विज्ञान और तकनीकी के सहारे ग्रह नक्षत्र तक पहुंच चुका है लेकिन अपने पड़ोसी के दुःख दर्द से अनभिज्ञ है। कम श्रम, कम लागत एवं कम निवेश के जरिए वह आसमान छू लेने की इच्छा रखता है पर जमीनी हकीकतों से कोई वास्ता रखना नहीं चाहता।

निष्कर्ष

जनसंचार माध्यमों ने लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाया है। अब लोग जानने लगे हैं कि जस समूह में उन लोगों का पालन–पोषण हुआ है उस समूह में जीने का रास्ता ही एकमात्र रास्ता नहीं है बल्कि जीवन जीने के अनेक रास्ते हैं। जनसंचार में हुए क्रांतिकारी परिवर्तन , राष्ट्र के अंदर विभिन्न समूहों में बंटे हुए समाज को एक सामाजिक संगठन के मूल्य एवं आदर्श एक समान रूप में विकसित हो रहे हैं। इस तरह यह एक तरफ तो राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दे रहा है तो दूसरी तरफ सामाजिक परिवर्तन में अपना महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। गांव के सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के लिए गृह निर्माण, स्वास्थ्य, कृषि, रहन–सहन, विकास योजनाएं, उद्योग में आधुनिक तकनीक का अनुकूलन आवश्यक है। जनसंचार माध्यम द्वारा गांवों में आधुनिक तकनीक का उपयोग पर जोर दिया जा रहा है और आज इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगा है।

संदर्भ सूचीः–

1. उदय सिंह राजपूत (2010) आदिवासी विकास एवं गैर–सरकारी संगठन रावत पब्लिकेशन जयपुर नई दिल्ली, बैंगलोर, हैदराबाद, गुवाहाटी पृष्ठ सं. 3
2. गोपाल त्रिपाठी (1973) भारत की जनजातियों का एकीकरण वन्यजाति वर्ष 21, अंक। पृष्ठ सं. 8–13
3. राकेश भट्ट (1995) जनजातीय उद्यमिता का विकास हिमांशु पब्लिकेशन जयपुर पृष्ठ सं 8–13
4. जनजातीय क्षेत्रीय विकास विभाग उदयपुर (राजस्थान)
5. राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग भारत सरकार नई दिल्ली

6. हितेन्द्र सिंह राठौड़ (2010) जनसंचार साधन और ग्रामीण समुदाय हिमांशु पब्लिकेशन 464 हिरण मगरी सेक्टर 11 उदयपुर पृष्ठ सं. 3
7. Chandaa, R.C. and Sidhu, M.S., 1980, Introduction to population geography, Kalyan Publication, New Delhi, Page No 59-62
8. District Census Handbook Ambedkar Nagar 2018
9. India (2001) Mass Communication, Publication Division, Ministry of Information and Broadcasting Government of India. Patiala House, New Delhi.
10. Lussian Pie; Communication and Development Edited, Newe Jerssey University Press, New Jerssey; 1972 Page no 4
11. Pathak K.P. ; Role of I.R.D.P. in the rural development of U.P.: A case study of five villages of Firozabad District-Published thesis Research Publications Rajsthan, Jaipur, 1989 Page no 7
12. World Bank Collection of Development indicators (2020)
13. अग्रवाल, जी.सी. कुलश्रेष्ठ एस.पी. (2017–18) शैक्षिक तकनीकी एवं सूचना संप्रेषण तकनीकी अग्रवाल प्रकाशन पेज नंबर 103–114
14. चौरसिया, महिप, 2018 सामाजिक आर्थिक रूपांतरण एवं ग्रामीण विकासः जौनपुर जनपद का एक भौगोलिक अध्ययन, स्वीकृत शोध प्रस्ताव, वीर बहादूर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर।
15. चौरसिया, सोनम, 2019 इंटरनेट का किशोर छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन, स्वीकृति शोध प्रस्ताव, छत्रपति शाहूजी महारज विश्वविद्यालय कानपुर